भूमिका

भारतभूमि अनुपम प्राकृतिक संपदा से संपन्न है। इस भूमि के प्रायः प्रत्येक भाग में समृद्ध मानव जीवन एवं संस्कृति को धारण करने के लिये विपुल प्राकृतिक साधन उपलब्ध हैं। भारत के लोगों ने प्रकृति की इस विशिष्ट अनुकंपा को कृतज्ञतापूर्वक स्वीकार किया है। अपने इस परिवेष के मध्य सहस्राब्दियों से रहते हुए उन्होंने इस प्राकृतिक प्राचुर्य का समुचित नियोजन करने की अत्यंत प्रभावी व्यवस्थाएँ, तकनीकें एवं विशेष दक्षताएँ विकसित की हैं।

संपूर्ण भारतभूमि पर अबाधित प्राकृतिक समृद्धि व्याप्त है और इसीलिये सब स्थानों पर एक विशिष्ट भौगोलिक एकरूपता दिखायी देती है। पर भारत के विभिन्न भागों के प्राकृतिक परिवेष की अपनी-अपनी विशेषताएँ भी हैं, अपना-अपना विशिष्ट वैविध्य भी है। भारत के विभिन्न भागों के लोगों ने अपने स्थानीय परिवेष की विशिष्टताओं को समझा है और उनके अनुरूप विशिष्ट एवं विविध कृषि एवं सिंचाई की व्यवस्थाएँ बनायी हैं, विविध शिल्प एवं तकनीकें विकसित की हैं, अपने घरों एवं सार्वजनिक स्थानों में विविध प्रकार के स्थापत्य का प्रदर्शन किया है, विविध सामाजिक व्यवस्थाओं एवं प्रथाओं का अनुसरण किया है। पर यह सारी विविधता विशिष्ट एवं सर्वत्र व्याप्त भारतीय प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक एकरूपता के मध्य ही अभिव्यक्त हुई है।

भारत के विभिन्न भागों की विविध प्राकृतिक संपदाओं और वहाँ के लोगों कि विशिष्ट भौतिक एवं सांस्कृतिक व्यवस्थाओं एवं दक्षताओं का अवलोकन करना एक अनूठा मार्मिक अनुभव होता है। भारत के विभिन्न भागों के लोग अपने प्राकृतिक परिवेष के साथ सामञ्जस्य बैठाते हुए उसके अनुरूप अपने जीवन को ढालते रहे हैं। अपने परिवेष के साथ इस प्रकार एकरूप हो जाने में, अपने आसपास की प्रकृति के अनुरूप ढलते जाने में, एक विशिष्ट कलात्मकता के, विशिष्ट काव्य के दर्शन होते हैं।

भारत के विभिन्न भागों के भूगोल, भूविज्ञान, भूगर्भीय संरचना, जलवायु, जनसांख्यिकी, भू-उपयोग, कृषि, पशुपालन, शिल्प, उद्योग, संस्कृति एवं धर्म आदि के बारे में विस्तार से जानना अपने आप में महत्त्वपूर्ण है। विभिन्न भागों के लोगों के जीवन एवं परिवेष में कोई सुधार अथवा विकास करने के किसी प्रभावी हस्तक्षेप के पूर्व तो यह सब जानना अनिवार्य ही है। मध्यप्रदेश जिला संसाधन मानचित्रकोष प्रकल्प प्रदेश के सब जिलों के लिये विस्तृत भौगोलिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और सांख्यिकी एवं तकनीकी सूचनाओं का संकलन एवं विश्लेषण करने और विभिन्न जिलों में प्रकृति एवं सभ्यता के मध्य व्यवहार में प्रकट होने वाली विशिष्ट काव्यात्मकता को अभिव्यक्त करने का प्रयास है।

झाबुआ एवं अलीराजपुर कठिन प्राकृतिक परिवेष में स्थित हैं। प्रदेश के दक्षिण-पश्चिमी छोर पर गुजरात की ओर बहती हुई नर्मदा के उत्तरी तट पर स्थित इस क्षेत्र की भूमि उत्तर में विंध्याचल और दक्षिण में मालवा के पठार का भाग है। यहाँ सब ओर अकृष्य ऊँची पहाड़ियाँ अथवा टीले फैले हुए हैं। पहाड़ियों और टीलों के बीच अपेक्षाकृत नीची अर्धमैदानी भूमि है, पर समतल तो कहीं भी नहीं है, सब स्थानों पर भूतल समुद्र की लहरों के समान ऊँचे-नीचे लहराता हुआ ही दिखता है। सामान्य वैज्ञानिक मापदंडों के अनुसार यहाँ सतत सिंचाई अथवा सघन कृषि के योग्य अच्छी उर्वर भूमि है ही नहीं। फिर भी यहाँ के लोग इस कठिन भूमि पर पर्याप्त सघन एवं समृद्ध

फसलें उगाते हैं और राष्ट्रीय माध्यमान से कुछ अधिक ही खाद्यान्न का उत्पादन कर लेते हैं।

झाबुआ एवं अलीराजपुर भील जनजाति का स्थान है। भीलों का अपना इतिहास एवं परंपराएँ हैं। भीलों के जातिपुराण के अनुसार प्रथम भील को स्वयं महादेव शिव के हाथों हल एवं बैलों की जोड़ी और साथ ही भूमि से विपुल उपज प्राप्त करते रहने का वरदान प्राप्त हुआ था। झाबुआ एवं अलीराजपुर के भील-कृषक मानो भगवान् शिव के उस वरदान को सत्य प्रमाणित करने के लिये ही अपने अध्यवसाय और भूमि, जल एवं पशुओं के प्रति अपने विशेष लगाव से इस प्रायः अनुर्वर भूमि पर प्रचुर मात्रा में अनाज, दालें एवं तिलहन उगा लेते हैं।

मध्यप्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद् के हम आभारी हैं कि उन्होंने इस प्रकल्प संबंधी हमारे प्रस्ताव को स्वीकार कर हमें प्रदेश के विभिन्न जिलों की भूमि, परिवेष एवं लोगों के बारे में इतने विस्तार से जानने का अवसर दिया है। इस प्रकल्प के प्रारंभ के समय डॉ. महेश शर्मा परिषद् के महानिदेशक थे, उनके पदनिवृत्त होने के बाद से डॉ. प्रमोद कुमार वर्मा परिषद् के महानिदेशक हैं। दोनों इस प्रकल्प में व्यक्तिगत रुचि लेते रहे हैं और दोनों का सतत सहयोग हमें मिलता रहा है। जिला संसाधन मानचित्रकोष के काम के लिये नियोजित परिषद् के वैज्ञानिक तो उत्साहपूर्वक इस कार्य में लगे ही हैं, परिषद् के अन्य सब विभागों के वैज्ञानिकों एवं अधिकारियों का सहयोग भी इस कार्य के लिये सर्वदा मिलता रहा है।

इस प्रकल्प संबंधी पत्रकों पर हस्ताक्षर करते समय मध्यप्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री स्वयं उपस्थित थे। वे और माननीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री इस प्रकल्प में व्यक्तिगत रुचि लेकर मानचित्रकोष की पूरी टीम का उत्साहवर्धन करते रहे हैं। मध्यप्रदेश शासन के समस्त विभागों और विभिन्न जिलों के प्रशासन का सहयोग भी हमें मिलता रहा है। इस संबंध में मध्यप्रदेश के भू-अभिलेखायुक्त एवं उनके अधिकारियों का सहयोग विशेष उल्लेखनीय है।

झाबुआ मानचित्रकोष के लिये हमने अनेक बार वहाँ के जिलाधीश एवं उनके अधिकारियों का सहयोग माँगा है और उन्होंने प्रयासपूर्वक हमारे लिये सब वांछित सूचनाएँ उपलब्ध करवायी हैं। वहाँ के जिलाधीश स्वयं इस विषय पर अनेक बैठकों के लिये समय निकालते रहे हैं। उनके ऐसे उदार सहयोग के लिये हम संपूर्ण जिला प्रशासन के और विशेषतः समय-समय पर वहाँ रहे जिलाधीशों के आभारी हैं।

झाबुआ के भीलों के साथ मिलकर वर्षों से कार्यरत श्री महेश शर्मा, श्री हर्ष चौहान और उनके अनेक युवा साथियों के सहयोग से ही हमारा झाबुआ जिले के भीतरी गाँवों और सामान्य भीलों के घरों तक पहुँच पाना और इस प्रकार उनके जीवन को निकट से समझ पाना संभव हो पाया है। इस सहयोग के बिना हमारी समझ अधूरी ही रहती।

झाबुआ जिले को 2008 में झाबुआ एवं अलीराजपुर दो पृथक् जिलों में विभाजित कर दिया गया है। इस मानचित्रकोष में प्रस्तुत दीर्घकालीन आंकड़े अविभक्त झाबुआ जिले के हैं, और झाबुआ जिले का अर्थ अधिकतर संदर्भों में अविभक्त जिले से ही है। पर जहाँ-जहाँ संभव हो पाया, वहाँ दोनों जिलों के पृथक् आंकड़े भी दे दिये गये हैं। 2011 की जनगणना के कुछ सीमित एवं प्रारंभिक आंकड़े अभी प्रकाशित हुए हैं, इनका समावेश उपयुक्त स्थानों पर कर लिया गया है।

मेरे अग्रज साथी श्री सूर्यकान्त बाली ने झाबुआ एवं अलीराजपुर मानचित्रकोष का हिंदी संस्करण बनाने में उदारतापूर्वक अपना समय एवं सहयोग देना स्वीकार किया। यह कार्य इस विषय में उनकी पहल के कारण ही संपन्न हो पाया है। केंद्र में मेरे साथी श्री बनवारी और श्री मण्ड्यम दोड्डमने श्रीनिवास का सहयोग तो सब कार्यों में सर्वदा बना ही रहता है। और, आञ्जनेय, जीविषा, अर्चन एवं कुसुम के स्नेह, रुचि एवं प्रोत्साहन से ही सब कार्यों का संपादन हो पाता है।

नयी दिल्ली
वसन्त पञ्चमी, कलि 5114
28 जनवरी 2012

जितेन्द्र बजाज